प्रकाशनार्थ।

20 सितंबर, 2024

गोरखनाथ मंदिर कथा।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 55 वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 10 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रीमद्भागवत महापुराण कथा के पूर्णाहुति के अवसर पर गोरक्षपीठाधीश्वर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री परम पूज्य योगी आदित्यनाथ महाराज जी ने कहा कि कथा का मतलब होता है कि जो कुछ भी हमने उसको जीवन में उतारने का काम करे, तभी उसका लाभ मिलता है। 5000 वर्षों से चली आ रही कथा को 3-3 घंटे बैठकर सात दिन पूरी श्रद्धा के साथ सुने यह भारत मे ही सम्भव है। यह कथा भारत की आत्मा का आधार है। यह राष्ट्रीय अखण्डता को भी प्रदर्शित करती है

भारत वही है जहाँ दक्षिण भारत से निकला एक सन्यासी देश के चारों कोनों में चार पीठों की स्थापना करता है,यही भारत राष्ट्रीयता है। भारत पूरब से पश्चिम तक उत्तर से दक्षिण तक एक इकाई के रूप में रहा है। भारत की आत्मा इसी भाव में बसती है,रामानुजाचार्य हो या रामानन्दाचार्य हो, गुरु गोरक्षनाथ हो, या कबीर दास हो इन पूज्य सन्तों की परम्परा भारत को जोड़ने वाली रही है जो तोड़ने वाले रहे हैं, उन्हें देश के लोगों ने असुर कहा है।

उन्होंने कहा कि लेकिन कुछ जोड़ने वाले भी रहे है, जिनकी देश ने पूजा की है काशी का जो ज्ञानवापी रूप है,वह साक्षात विश्वनाथ की प्रतीक है, उससे ज्ञान की प्राप्ति के लिए आदि शंकर केरल से चलकर आते हैं। वहीं उनको विश्वनाथ जी चाण्डाल के में दर्शन देकर अद्वैत की शिक्षा देते हैं। भगवान की कथा 5000वर्षों से करोड़ों लोगों का उदार किया है। कथा व्यास श्री राममंदिर गुरुधाम वाराणसी से पधारे श्रीमद्जगतगुरु अनंतानंद द्वाराचार्य काशीपीठाधीश्वर स्वामी डॉ राम कमल दास वेदांती जी महाराज ने व्यास पीठ कहा कि भगवान की कथा सनातन कथा है ,यह कभी पूरी नहीं होती यही इस कथा की विशेषता है हम सात दिनों या नव दिनों में अपने अनुष्ठान को पूरा करते हैं; कथा को नहीं।

यह तो नित्य प्रवाहमान है। श्रीमद्भागवत कथा बताती है कि हमें अपने किसी इष्टदेव में भेद नहीं मानना चाहिए । परमात्मा के रूप अनेक हैं किन्तु तत्व में कोई भेद नहीं है।

गोविन्द की लीलाएँ हमें प्रेरणा देती हैं कि हमें अपने परिवार में पत्नी व बच्चों के साथ बैठकर आध्यात्मिक चर्चाएँ करनी चाहिए तथा दिन मे एक बार पूरे परिवार के साथ में बैठकर भोजन करना चाहिए, इससे परिवार के सदस्यों में प्रेम बढ़ता है। भगवान अपनी सभी 16108 रानियों के साथ एक हीं समय में भोजन व आध्यात्मिक चर्चा करते थे। हमारा जीवन भगवान का नाम लेकर बीते तो उसकी चरितार्थता हो जाती है। उन्होंने "जल जाये जिह्वा पापिनी, राम के बिना" भजन गाकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया ।

सनातन धर्म भारत की आत्मा है। यहाँ के बिना पढ़े लिखे लोगों में भी जो आध्यात्मिका का भाव देखने को मिलता है बह दूसरे देशों के पढ़े-लिये लोगों में भी नहीं मिलती। यह भाव सनातन धर्म की मूल विशेषता है।

सुदामा चरित्र का वर्णन करते हुए कहा कि सुदामा भगवान के सखा थे। यह पूरा संसार सखाभाव में हीं विद्यमान है। इस संसार रूपी वृक्ष पर जीवात्मा और परमात्मा दो सखा बैठे है। एक कर्ता है तथा दूसरा भोक्ता है। हमारे जीवन के सखा परमात्मा हीं है, क्योंकि वहीं हमारे लिए सब कुछ करने वाले हैं, हम तो केवल भोग करते हैं। किन्तु हमें जब कर्तापन को मिथ्या अभिमान होता है, तभी हम दुखी होते हैं। हमें उस भगवान की मित्रता को याद रखना चाहिए, तभी जीवन सफल होगा।

गुरु सान्दीपनी की कथा सुनाते हुए कहे कि जो शिक्षक अपने सभी शिष्यों में बिना भेद-भाव के सबको समान भाव से शिक्षा देते हैं, उनके घर भगवान् स्वयं

चलकर आते हैं। गुरू सान्दीपनि के घर भगवान श्रीकृष्ण स्वयं शिष्य बनकर पढ़ने जाते हैं।

उन्होंने कहा कि जो दूसरे के भाग को हडपता है, उसके घर दरिद्रता आती है। अन्याय पूर्वक लाया हुआ धन अधिकतम दश वर्षों तक ही रुकता है, एग्यारहवें वर्ष में वह समूल नष्ट हो जाता है। इसलिए किसी के धन को हड़पने का प्रयास न करें। यह सम्पूर्ण विश्व ईश्वर का है, उसका त्याग भावना से भोग करें। अपना बनाने का प्रयास न करें, नहीं तो वह दुख का कारण बनेगा।

सुदामा का अर्थ सुंदर रस्सी होता है, जिसने अपने प्रेम की रस्सी से भगवान को बाँध लिया है, वहीं सुदामा है। तथा अपार दुःख होने पर भी जिसका शील नष्ट न हो वहीं सुशीला है, जिससे सुदामा का विवाह होता है।

उन्होंने कहा कि भगवान भाव के भूखे हैं, वस्तुओं के नहीं, सुदामा के द्वारा ले जाए गये चार मुठठी चावल को पाकर भगवान इतना प्रसन्न होते हैं, कि उन चावलों को कच्छे ही खाने लगते हैं, सुदामा से भगवान पूछते हैं कि आपको क्या चाहिए, तो वे कहते है कि भक्त की सबसे बड़ी सम्पत्ति भगवान होते हैं, वो जब मेरे पास हैं तो और क्या चाहिए ?

उन्होंने श्रीकृष्ण जामवन्ती विवाह, गुरु सान्दीपनी से शिक्षा, सुदामा चरित्र, श्रीकृष्ण सुदामा मिलन, दत्तात्रेय अवतार, जनमेजय यज्ञ सहित अनेक प्रसंगों को सुनाया।

प्रो सी बी सिंह के पुस्तक "जासु नाम जप जागहि जोगी" का विमोचन मुख्यमंत्री जी, कथा व्यास तथा अन्य संत गण के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। आरती में मुख्यमंत्री महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज के साथ नैमिषारण के विद्या चैतन्य, जूनागढ़ से महंत शेरनाथ जी , दिल्ली से नारायण गिरी, अयोध्या से महंत धर्मदास , अयोध्या से श्रीराम दिनेशचार्य, हनुमानगढ़ी से अयोध्या राजूदास आदि ने आरती किया। कथा समापन में पी डी जैन, मार्कण्डेय यादव, ब्लॉक प्रमुख बृजेश यादव, श्रीमती सुनीता सिंह, संजय सिंह, अवधेश सिंह, महेश पोद्दार शामिल रहे। कथा का समापन आरती एवं प्रसाद वितरण से हुआ । संचालन डॉ श्री भगवान सिंह जी ने किया।